International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745, Print ISSN: 2664-7737
Received: 24-09-2025, Accepted: 24-10-2025, Published: 08-11-2025
Volume 7, Issue 4, 2025, Page No. 61-63

21वीं सदी में गुट निरपेक्ष आंदोलन और भारत

शशि कुमार[1], डॉ शेखर कुमार[2]
[1] शोधार्थी, स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत
[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, नंदलाल सिंह महाविद्यालय, दाउदपुर सारण, बिहार, भारत

सारांश
गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) शीत युद्ध के समय शुरू हुआ, जब दुनिया अमेरिका और सोवियत संघ जैसे दो ताकतों में विभाजित थी। इसका मुख्य लक्ष्य विकासशील देशों को एक साथ लाना था ताकि वे किसी भी ताकतवर देश के प्रभाव से बच सकें। भारत ने NAM को बनाने में मदद की और इसे एक खास सोच दी। अमेरिका, चीन और रूस जैसी ताकतें बढ़ रही हैं, जिससे NAM की उपयोगिता पर सवाल उठ रहे हैं। फिर भी, आतंकवाद, मौसम में बदलाव, आर्थिक असमानता और मानवाधिकार जैसे मुद्दों पर NAM की राय अभी भी जरूरी है। भारत की विदेश नीति, खासकर रणनीतिक स्वायत्तता, आज भी NAM की भावना को बनाए हुए है। हालाँकि भारत अब सिर्फ NAM तक ही सीमित नहीं है, बल्कि BRICS, SCO, G20 जैसे मंचों पर भी काम कर रहा है, फिर भी NAM उसके लिए विकासशील देशों से बात करने और सहयोग करने का एक जरूरी तरीका है। यह लेख 21वीं सदी में NAM की भूमिका, भारत के लिए इसका महत्व और भविष्य के बारे में बताता है। इस स्टडी से पता चलता है कि NAM उतना ताकतवर नहीं रहा, लेकिन फिर भी यह भारत के लिए दुनिया में शांति बनाए रखने और सभी के साथ न्याय करने का एक अच्छा तरीका है।

मूल शब्द: गुट निरपेक्ष आंदोलन, भारत, 21वीं सदी, वैश्विक राजनीति, रणनीतिक स्वायत्तता, बहुधरुवीय विश्व व्यवस्था

प्रस्तावना
गुटनिरपेक्षता की नीति अमेरिका और यूएसएसआर के बीच शीत युद्ध का परिणाम है। गुटनिरपेक्षता नीति निरस्त्रीकरण, विश्व शांति, आत्मनिर्णय का अधिकार, लोगों के बीच समानता और उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद, नस्लवाद और नव–उपनिवेशवाद से मुक्त दुनिया को प्राप्त करने में वर्तमान दुनिया की बेहतर नीतियों में से एक है। 1970 के दशक की शुरुआत में गुटनिरपेक्ष नीति गुटनिरपेक्ष आंदोलन बन गई। गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) का उदय एक ऐसे वक़्त में हुआ जब दुनिया की राजनीति काफ़ी नाजुक दौर से गुज़र रही थी। दूसरे विश्व युद्ध के बाद अमेरिका और सोवियत संघ दो बड़ी ताक़तें बनकर उभरे और पूरी दुनिया शीत युद्ध की चपेट में आ गई। इन महाशक्तियों ने अपने–अपने सैन्य संगठन बना लिए, अमेरिका ने NATO और सोवियत संघ ने वारसा संधि। एशिया, अफ़्रीका और लैटिन अमेरिका जैसे नए–नए आज़ाद हुए देशों के सामने यह मुश्किल थी कि वे किस गुट में शामिल हों।
भारत, मिस्र, यूगोस्लाविया, इंडोनेशिया और घाना जैसे देशों ने महसूस किया कि अगर वे किसी भी गुट में शामिल होते हैं, तो उनकी स्वतंत्रता और नीति–निर्माण की क्षमता बाधित हो जाएगी। इसलिए उन्होंने एक ऐसा मंच बनाने का निश्चय किया जहाँ विकासशील देशों के हितों की रक्षा हो सके। 1955 में इंडोनेशिया के बांडुंग सम्मेलन ने इस दिशा में निर्णायक कदम उठाया। इससे एशिया और अफ़्रीका के देशों को साझा सोच और सहयोग की राह मिली। इसके बाद 1961 में बेलग्रेड सम्मेलन में गुटनिरपेक्ष आंदोलन का औपचारिक शुभारंभ हुआ। इस सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू, यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति टिटो और मिस्र के राष्ट्रपति नासिर जैसे नेताओं ने अग्रणी भूमिका निभाई।
इस आंदोलन ने राज्यों के बीच शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व, देशों के आंतरिक मामलों में अहस्तक्षेप और सभी देशों के अपनी राजनीतिक प्रणाली और आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के रास्ते चुनने के अधिकार जैसे सिद्धांतों का पालन किया। इसने राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों का लगातार समर्थन किया, एक नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था बनाने के लिए संघर्ष किया, मानवाधिकारों और बुनियादी स्वतंत्रताओं का सम्मान किया, और प्राकृतिक संसाधनों पर संप्रभुता का समर्थन किया। गुटनिरपेक्ष आंदोलन वैध अंतरराष्ट्रीय सीमाओं की रक्षा, बल के प्रयोग या धमकी का त्याग और देशों के बीच विवादों के शांतिपूर्ण समाधान का पक्षधर था। इसने उपनिवेशवाद के खिलाफ लगातार लड़ाई लड़ी और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों को सहारा दिया। उपनिवेशवाद को खत्म करना इसका एक खास काम था। गुटनिरपेक्ष देशों ने संयुक्त राष्ट्र पर दबाव डालकर उपनिवेशवाद से मुक्ति की प्रक्रिया तेज करने के लिए जरूरी कदम उठाए।
भारत इस आंदोलन के संस्थापक देशों में से एक था। गुटनिरपेक्ष आंदोलन का उद्देश्य ऐसे देशों को एक मंच प्रदान करना जो किसी सैन्य गुट का हिस्सा नहीं बनना चाहते थे। यह आंदोलन विश्व शांति, निरस्त्रीकरण और वैश्विक सुरक्षा के पक्ष में रहा। भारत के लिए गुटनिरपेक्ष आंदोलन एक स्वाभाविक विकल्प था। स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद ही भारत ने अपनी संप्रभुता और आत्मनिर्भरता बनाए रखने के लिए पंचशील सिद्धांत और गुटनिरपेक्षता को अपनाया। गुटनिरपेक्ष आंदोलन में भारत के शामिल होने के कारणों में उसकी स्वतंत्र विदेश नीति, भूगोल, आर्थिक लक्ष्य और विचारधारा शामिल थे।
इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य देश की संप्रभुता की रक्षा करना था। औपनिवेशिक शासन से मुक्त होकर, भारत किसी भी सैन्य गुट के प्रभाव से बचना चाहता था और अपनी विदेश नीति को स्वतंत्र रखना चाहता था। शीत युद्ध के दौर में, भारत ने अमेरिका और सोवियत संघ के वैचारिक संघर्ष को अस्वीकार कर दिया। भारत ने दोनों गुटों से अलग रहकर अपनी स्वतंत्र विचारधारा का पालन किया।
आर्थिक विकास भी एक महत्वपूर्ण कारण था। भारत गरीबी दूर करने, औद्योगीकरण को बढ़ावा देने, कृषि में सुधार करने और शिक्षा का प्रसार करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहता था। सैन्य गुटों में शामिल होने के बजाय, भारत ने अपने संसाधनों को आर्थिक और सामाजिक विकास में लगाने का निर्णय लिया। नेहरू ने स्पष्ट कहा कि भारत का मक़सद किसी गुट में शामिल हुए बिना विश्व शांति और सहयोग का मार्ग अपनाना है। इस प्रकार NAM केवल राजनीतिक रणनीति नहीं था, बल्कि भारत की विदेश नीति और राष्ट्रीय पहचान का हिस्सा बन गया।

शोध समस्या

भारत ने गुट निरपेक्ष आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई और अपने विदेश नीति के सिद्धांतों – शांति, स्वतंत्रता और सामरिक स्वायत्तता को बनाए रखा। हालांकि, 21वीं सदी में वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य में कई बदलाव आए हैं। शीत युद्ध के बाद अमेरिका और चीन जैसी महाशक्तियों का उदय हुआ है, और आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा और बहुधरुवीयता जैसी नई चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं।

इन परिवर्तित परिस्थितियों में यह प्रश्न उठता है कि क्या गुट निरपेक्ष आंदोलन अब भी अपनी ऐतिहासिक प्रासंगिकता बनाए रखता है और वैश्विक मंच पर विकासशील देशों के हितों की रक्षा करने में सक्षम है। साथ ही, यह देखना आवश्यक है कि भारत की विदेश नीति में NAM की भूमिका किस प्रकार बदल रही है और भारत किस हद तक इस आंदोलन के माध्यम से अपनी रणनीतिक स्वायत्तता सुनिश्चित कर पा रहा है।

शोध उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य गुट निरपेक्ष आंदोलन के ऐतिहासिक विकास और उसके 21वीं सदी में बदलते स्वरूप का विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत वैश्विक शक्ति समीकरण, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में NAM की भूमिका, और विकासशील देशों के हितों की सुरक्षा के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन शामिल है। इसके अतिरिक्त, भारत की विदेश नीति में NAM के महत्व और उसकी वर्तमान भूमिका का मूल्यांकन करना भी इस शोध का उद्देश्य है। शोध के दौरान यह जाना जाएगा कि कैसे भारत ने NAM के माध्यम से अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखी है, और वैश्विक चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में इस आंदोलन से भारत को किन अवसरों और सीमाओं का सामना करना पड़ रहा है। इस शोध का उद्देश्य NAM और भारत के लिए भविष्य की संभावनाओं का आकलन करना और यह समझना है कि किस प्रकार यह आंदोलन 21वीं सदी में विकासशील देशों के लिए एक कूटनीतिक मंच के रूप में प्रासंगिक रह सकता है।

साहित्य समीक्षा

राहुल मुखर्जी (2022) ने "इंडिया एंड द फ्यूचर ऑफ नॉन–अलाइनमेंट" में भारत की बहुपक्षीय कूटनीति और वैश्विक गुटनिरपेक्षता की भूमिका पर गहन विश्लेषण किया। लेखक का तर्क है कि भारत को गुटनिरपेक्षता की पारंपरिक अवधारणा से आगे बढ़कर वैश्विक समस्याओं को हल करने के लिए सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

राजेश बसरूर (2018) की 'इंडियास स्ट्रैटेजिक चॉइसेस' के अनुसार, भारत को NAM को एक मंच के रूप में उपयोग करते हुए वैश्विक शक्ति संतुलन में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

कान्ती बाजपेयी (2016) अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि भारत अब NAM को रणनीतिक सुरक्षा मंच की बजाय "सॉफ्ट पावर डिप्लोमेसी" के साधन के रूप में देखता है। भारत BRICS, SCO और QUAD जैसे मंचों पर सक्रिय है, लेकिन NAM को वह विकासशील देशों के बीच नैतिक नेतृत्व और ऐतिहासिक वैधता बनाए रखने का माध्यम मानता है।

अनिरुद्ध गुप्ता (2011) ने अपने शोध लेख में स्पष्ट किया कि शीत युद्ध की समाप्ति के बाद NAM की सामरिक प्रासंगिकता अवश्य कम हुई, किंतु आर्थिक असमानता, आतंकवाद और पर्यावरण संकट जैसे मुद्दों ने इसकी नयी उपयोगिता पैदा कर दी। वे लिखते हैं कि NAM अब एक सुरक्षा–राजनीति मंच से बदलकर "विकास और सहयोग" का मंच बन गया है।

इनामुल हक़ (2002) ने अपनी पुस्तक में तर्क दिया कि NAM का महत्व केवल शीत युद्ध तक सीमित नहीं रहा, बल्कि 21वीं सदी में भी यह विकासशील देशों के लिए एक नैतिक और राजनीतिक शक्ति है। उनके अनुसार, NAM का सबसे बड़ा योगदान यह है कि इसने छोटे और मध्यम देशों को वैश्विक मंच पर सामूहिक पहचान दी।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध अध्ययन गुणात्मक और ऐतिहासिक–विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें 21वीं सदी की वैश्विक राजनीति और भारत की विदेश नीति के संदर्भ में गुट निरपेक्ष आंदोलन की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन के लिए मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिनमें विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकें, शोध लेख, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र तथा ऑनलाइन संसाधन शामिल हैं। इसके अतिरिक्त गुट निरपेक्ष आंदोलन के सम्मेलनों से संबंधित आधिकारिक घोषणाएँ, संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत एवं अन्य NAM देशों द्वारा दिए गए भाषण तथा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा प्रकाशित और नीतिगत दस्तावेज़ प्राथमिक स्रोत के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। शोध पद्धति के अंतर्गत ऐतिहासिक दृष्टिकोण से शीत युद्ध काल से लेकर वर्तमान तक NAM के विकासक्रम को समझने का प्रयास किया गया है, वहीं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से 21वीं सदी की बहुधरुवीय वैश्विक व्यवस्था में भारत की विदेश नीति और गुट निरपेक्ष आंदोलन की प्रासंगिकता का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य चर्चा

भारत के संदर्भ में NAM का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि भारत न केवल इसका संस्थापक सदस्य रहा है, बल्कि उसने सदैव इसे अपनी विदेश नीति का आधार माना है। भारत की कूटनीति में रणनीतिक स्वायत्तता का जो विचार है, वह गुट निरपेक्षता की ही देन है। आज जब भारत अमेरिका, रूस, यूरोप और एशिया के अन्य देशों से बहुआयामी संबंध रखता है, तब भी NAM उसे विकासशील देशों की सामूहिक आवाज़ और वैश्विक दक्षिण का नेतृत्व प्रदान करता है।

1946 से 1954 तक का समय भारत की विदेश नीति और गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नींव का प्रारंभिक चरण माना जाता है। इस कालखंड में भारत, चीन और मलेशिया जैसे देश स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ रहे थे, लेकिन भारत ने इन संघर्षों में प्रत्यक्ष रूप से समर्थन नहीं दिया। 1954–1962 के चरण में भारत की विदेश नीति को प्रायः 'पूर्व समर्थक' माना जाने लगा। इस अवधि में अमेरिका के राष्ट्रपति हैरी इमैन और सोवियत संघ के प्रमुख निकिता खुश्चेव थे। दोनों महाशक्तियों के नेतृत्व में आए बदलावों के कारण उनकी नीतियों में भी बदलाव आए, और इसका असर भारत की विदेश नीति की व्याख्या पर पड़ा।

1962–1971 के चरण में भारत की गुटनिरपेक्ष नीति ने एक निर्णायक मोड़ लिया और अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की स्थिति अधिक स्पष्ट और प्रभावशाली होने लगी। 1962 में भारत और चीन के बीच सीमा विवाद को लेकर युद्ध हुआ, जिसमें भारत को सैन्य नुकसान झेलना पड़ा। इस संकट की घड़ी में अमेरिका ने भारत को हथियार और सहायता प्रदान की, जिससे यह धारणा बनने लगी कि भारत पश्चिमी गुट के करीब जा रहा है। 1964 में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के निधन के बाद लाल बहादुर शास्त्री देश के प्रधानमंत्री बने। उन्होंने गुटनिरपेक्ष आंदोलन को और अधिक सशक्त रूप से अपनाया।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन, जो 20वीं सदी में उभरा, शीत युद्ध के दौरान नवस्वतंत्र देशों को अमेरिका और सोवियत संघ के प्रभाव से बचाने का प्रयास था। 1961 में बेलग्रेड में 25 देशों के नेताओं ने मिलकर इसकी नींव रखी। यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति टीटो, मिस्र के राष्ट्रपति नासेर और भारत के प्रधानमंत्री नेहरू ने इसमें खास भूमिका निभाई। इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो और घाना के नेता क्वामे नक्रमा भी इसके संस्थापक सदस्यों में से थे। 20वीं

सदी के उत्तरार्ध में NAM ने उपनिवेशवाद–विरोध, नस्लभेद उन्मूलन, निरस्त्रीकरण, और आर्थिक सहयोग जैसे मुद्दों पर महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

1971–1990 के चरण के दौरान, भारत की गुटनिरपेक्ष नीति में बदलाव आए। 1971 में, भारत–पाकिस्तान युद्ध हुआ, जिसका कारण पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान के बीच राजनीतिक और जातीय संघर्ष था। लाखों शरणार्थी भारत में आए, जिससे सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ हुईं। चेतावनी के बाद भी, भारत ने सैन्य कार्रवाई की और युद्ध जीता। इस दौरान, भारत ने सोवियत संघ के साथ संधि की, जिससे उसे सुरक्षा मिली।

1990 के बाद, शीत युद्ध खत्म होने और सोवियत संघ के विघटन से भारत और गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) के संबंध बदल गए। NAM अब विकासशील देशों के लिए वैश्वीकरण, आर्थिक असमानता और आतंकवाद जैसे मसलों पर बात करने का मंच बन गया है। यह संघर्षों को सुलझाने और शांति बनाए रखने के लिए भी काम करता है। किंतु 1991 में सोवियत संघ के विघटन और शीत युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व राजनीति में एकधरुवीय व्यवस्था स्थापित हो गई। अमेरिका के प्रभुत्व वाले इस दौर में NAM की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न उठने लगे। आलोचकों का कहना था कि जब दो गुट ही नहीं रहे तो गुटनिरपेक्ष आंदोलन का अस्तित्व क्यों आवश्यक है।

21वीं सदी में यह बहस और गहरी हो गई। आज वैश्विक राजनीति केवल अमेरिका और रूस तक सीमित नहीं है, बल्कि चीन, यूरोपीय संघ, और भारत जैसे नए शक्ति केंद्र भी उभर आए हैं। आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, मानवाधिकारों का उल्लंघन, आर्थिक असमानता और सतत विकास जैसे मुद्दों ने NAM के सामने नई चुनौतियाँ रख दी हैं। भारत के लिए यह स्थिति विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण रही है। एक ओर भारत BRICS, SCO, ASEAN और G20 जैसे मंचों के माध्यम से वैश्विक निर्णय–प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है, वहीं NAM को वह विकासशील और 'ग्लोबल साउथ' देशों के साथ सहयोग और संवाद का एक महत्त्वपूर्ण मंच मानता है।

वर्तमान में भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) के मूल्यों का पालन करते हुए दुनिया की समस्याओं पर काम कर रहा है। अब NAM सिर्फ़ सैन्य समूहों से दूर रहने की बात नहीं है, बल्कि यह परमाणु हथियारों को खत्म करने, आतंकवाद का विरोध करने और दुनिया में शांति और न्याय लाने का एक तरीका है। भारत ने NAM के नियमों के अनुसार इन मामलों में दुनिया के सामने अपनी मजबूत राय रखी है। इस तरह, भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति न केवल इतिहास में जरूरी थी, बल्कि आज भी यह उसकी कूटनीति और दुनिया के लिए उसकी जिम्मेदारी का एक अहम हिस्सा है।

आज NAM की स्थिति शीत युद्ध काल से भिन्न अवश्य है, परंतु इसकी प्रासंगिकता अब भी कायम है। आतंकवाद, जलवायु संकट और वैश्विक असमानता जैसी चुनौतियों पर विकासशील देशों की सामूहिक आवाज़ उठाने के लिए NAM जैसा मंच आवश्यक है। भारत के लिए यह आंदोलन केवल ऐतिहासिक धरोहर नहीं, बल्कि एक रणनीतिक साधन भी है, जिससे वह अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में अपनी "रणनीतिक स्वायत्तता" बनाए रखते हुए शांति और सहयोग की दिशा में योगदान करता है।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन में सक्रिय होने के बाद भी, भारत के सामने कई दिक्कतें हैं। NAM में लगभग 120 सदस्य देश हैं, जिनकी राजनीतिक व्यवस्था, आर्थिक विकास और प्राथमिकताएँ अलग–अलग हैं। इससे मिलकर कोई फैसला लेना मुश्किल हो जाता है। फिर भी, NAM भारत और दूसरे विकासशील देशों के लिए एक मौका भी है। NAM में दिक्कतें तो हैं, लेकिन भारत के लिए दुनिया का नेतृत्व करने और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने के मौके भी हैं।

भारत ने NAM के सिद्धांतों का पालन करते हुए परमाणु निरस्त्रीकरण, आतंकवाद विरोध, सतत विकास और अंतर्राष्ट्रीय शांति की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाई है। 21वीं सदी में वैश्विक चुनौतियाँ जैसे जलवायु परिवर्तन, अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक असमानता, ऊर्जा सुरक्षा और वैश्विक स्वास्थ्य संकट (जैसे कोविड–19 महामारी) ने NAM की प्रासंगिकता को और बढ़ा दिया है। भारत ने इन मुद्दों पर NAM का सहारा लेकर विकासशील देशों के सामूहिक हितों को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर मजबूती से प्रस्तुत किया है।

21वीं सदी में गुट निरपेक्ष आंदोलन की पारंपरिक भूमिका भले ही कमजोर पड़ी हो, किंतु यह विकासशील देशों की सामूहिक शक्ति का प्रतीक बना हुआ है। भारत के लिए NAM एक ऐसा मंच है जहाँ वह न केवल अपनी विदेश नीति को संतुलित करता है, बल्कि वैश्विक दक्षिण की आवाज़ भी बनता है। इसलिए NAM को भारत की कूटनीति से अलग नहीं किया जा सकता। बदलते हुए वैश्विक संदर्भ में NAM की भूमिका पुनर्परिभाषित हो रही है और भारत के लिए यह अवसर है कि वह इसे नेतृत्वकारी दृष्टि से सशक्त बनाए।

निष्कर्ष

गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) के साथ भारत के जुड़ाव का विश्लेषण करने पर, यह स्पष्ट होता है कि भारत ने पश्चिमी और पूर्वी गुटों के प्रति समय–समय पर झुकाव दिखाया, लेकिन हमेशा अपने मूल सिद्धांतों का पालन किया। पश्चिमी देशों या सोवियत संघ के प्रति समर्थन के बावजूद, भारत ने अपनी स्वतंत्र विदेश नीति और निर्णय लेने की क्षमता को बनाए रखा। भारत किसी भी सैन्य गठबंधन का हिस्सा बनने से बचता रहा और अन्य देशों की राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों के आधार पर निर्णय लेता रहा। इस नीति ने वैश्विक मंच पर भारत की कूटनीतिक स्वतंत्रता सुनिश्चित की। पी.वी. नरसिंह राव के अनुसार, गुटनिरपेक्षता की नीति आज भी प्रासंगिक है क्योंकि यह बदलती वैश्विक परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्यों के लिए महत्वपूर्ण है।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन का मूल सिद्धांत सैन्य गुटों के प्रभाव में आए बिना देशों की स्वतंत्रता और विकास का समर्थन करना है। इसका लक्ष्य है कि राष्ट्र अपने अधिकारों के अनुसार स्वतंत्र रूप से निर्णय लें। भारत ने समय–समय पर इस सिद्धांत को सिद्ध किया है। वैश्विक राजनीति में भारत की बढ़ती भूमिका और उसकी कूटनीति में स्वतंत्रता बनाए रखने की नीति से स्पष्ट है कि NAM की जरूरत आज पहले से कहीं ज्यादा है। इस आंदोलन के माध्यम से, भारत ने न केवल अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा की, बल्कि विकासशील देशों के लिए एक समान और निष्पक्ष वैश्विक व्यवस्था की दिशा में भी कदम बढ़ाए हैं।

संदर्भ

1. अनिरुद्ध गुप्ता, "रीलेवेंस ऑफ NAM इन पोस्ट–कोल्ड वॉर वर्ल्ड," इंटरनेशनल स्टडीज़ जर्नल, खंड 48, संख्या 2, 2011, पृ. 123–140।
2. कान्ती बाजपेयी, "इंडियाज़ फॉरेन पॉलिसी: कोपिंग विद द चेंजिंग वर्ल्ड", नई दिल्ली: पियरसन, 2016।
3. इनामुल हक़, "नॉन–अलाइंड मूवमेंट इन द न्यू मिलेनियम", नई दिल्ली: आनंद पब्लिकेशन्स, 2002।
4. बासरूर, आर. "भारत की रणनीतिक पसंद", स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2018।
5. मुखर्जी, आर. "भारत और गुटनिरपेक्षता का भविष्य", ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2022।
6. सिंह, एस.डी. गुट निरपेक्ष आंदोलन की प्रासंगिकता. जयपुर: राजस्थान पब्लिशिंग हाउस, 2018।